स्रोत विज्ञान एवं टेक्नॉलॉजी फीचर्स

RNI REG. NO: MPHIN/2007/20200

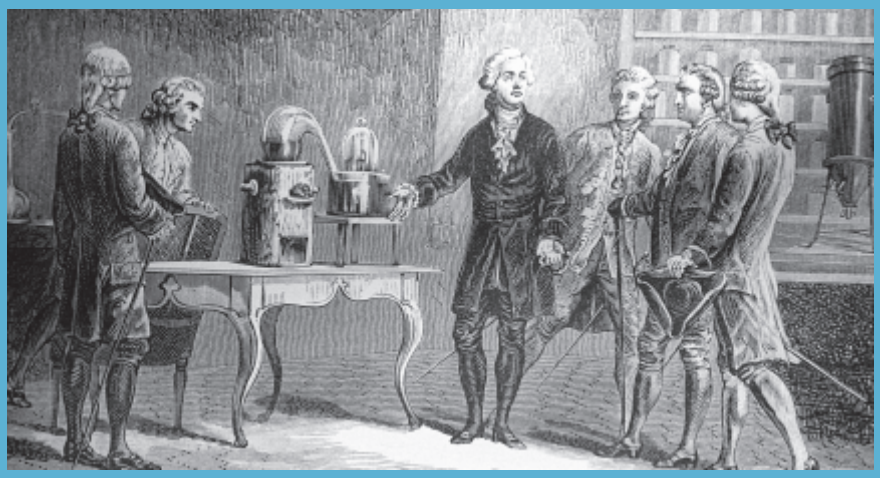

गणतंत्र को वैज्ञानिकों की ज़रूरत नहीं है

एन्तोन लेवॉज़िए (1743-1794) एक फ्रांसीसी रसायन शास्त्री थे। उन्हें आधुनिक रसायन शास्त्र का जनक गलत नहीं कहा जाता है।

लेवॉज़िए ने रसायन शास्त्र को कई नए विचार दिए और कई पुरानी धारणाओं को उखाड़ फेंकने में मदद की। जैसे तत्व की आधुनिक परिभाषा का श्रेय लेवॉज़िए को ही जाता है। इसी प्रकार से श्वसन, दहन और धातुओं की भस्म बनने के बीच मूल समानता दर्शाते हुए उनके प्रयोगों ने हमें इन तीनों प्रक्रियाओं की समझ विकसित करने में मदद की।

पहले माना जाता था कि तत्वों को एक-दूसरे में बदला जा सकता है। लेवॉज़िए ने अपने प्रयोगों से साबित कर दिया कि ऐसा नहीं होता। एक मान्यता यह थी कि जब कोई चीज़ जलती है तो उसमें से एक पदार्थ निकल जाता है और जलने पर वस्तुओं का वज़न कम हो जाता है। लेवॉज़िए ने कई प्रयोग करके दर्शाया कि जलने पर वस्तु का वज़न घटता नहीं बल्कि बढ़ता है। इसके लिए उन्हें जलने के दौरान उत्पन्न होने वाली गैसों को इकट्ठा करने व तौलने के उपकरणों का विकास करना पड़ा था।

लेवॉज़िए ने ही रसायन शास्त्र को उसका बुनियादी संहति के संरक्षण का नियम दिया था। मशहूर वैज्ञानिक लुई पाश्चर ने तो लेवॉज़िए को 'रसायन शास्त्र के नियम निर्माता' की संज्ञा दी थी।

मगर एक वैज्ञानिक होने के साथ-साथ वे फ्रांस में टैक्स वसूली करने वाली संस्था के प्रबंधकों में भी शामिल थे। जब फ्रांस में क्रांति हुई तो नए शासकों ने माना कि टैक्स वसूली करने वाले जनता के दुश्मन हैं और लेवॉज़िए समेत सारे प्रबंधकों को सज़ा-ए-मौत दी गई। लेवॉज़िए का सिर 8 मई 1794 के दिन कलम कर दिया गया।

जब उनके वैज्ञानिक योगदान का हवाला देकर नए शासकों से लेवॉज़िए को बख्श देने की सलाह दी गई तो क्रांतिकारियों का कहना था: गणतंत्र को वैज्ञानिकों की ज़रूरत नहीं है।

प्रकाशक, मुद्रक अरविन्द सरदाना की ओर से निदेशक एकलव्य फाउण्डेशन द्वारा एकलव्य, ई-10 शंकर नगर, बी.डी.ए. कॉलोनी, शिवाजी नगर, भोपाल - 462016 (म.प्र.) से प्रकाशित तथा आदर्श प्राइवेट लिमिटेड, इंदिरा प्रेस कॉम्पलेक्स, एम.पी. नगर, ज़ोन-1 भोपाल (म.प्र.) 462011 से मुद्रित। सम्पादकः डॉ. सुशील जोशी